फरवरी सन् १९५७

सुखमार्ग

मासिक पत्र

वार्षिक मू० १)

एक अङ्क =)

सम्पादक

वैद्य श्यामलाल 'सुहृद' एच० एल० एम० एस०

सुखमार्ग बेचने के लिये एजेन्ट चाहिये

• बहुत से छोटे-बड़े शहरों, कस्बों, मन्डियों और बस्तियों में 'सुखमार्ग' बेचने के लिये एजेन्ट बन चुके हैं और वे काफी तादाद में 'सुखमार्ग' बेच कर, स्वार्थ और परमार्थ दोनों को सिद्ध कर रहे हैं। फिर भी हमें कुछ ऐसे देश भक्त ऐजेन्टों की आवश्यकता है, जो उन स्थानों में जहां कोई एजेन्ट नहीं हैं 'सुखमार्ग' की एजेन्सी लेकर अपने स्वार्थ के साथ ही देश का भी कुछ उपकार साधन कर सकते हैं नियम बड़े सरल हैं। कमीशन भरपूर मिलता है। पत्र व्यवहार कीजिये।

पता—सुखमार्ग कार्यालय केमीकल प्रेस, मोहनगेट, अलीगढ़।

हमारे यहां बिकती है।

पेन्टेन्ट दवायें और गीता प्रेस की पुस्तकें

महाशय मोहनलाल मोहनगेट, अलीगढ़।

नया कलैन्डर

नीचे के पते पर पत्र भेजकर मुफ्त मंगाइये।

यू० पी० केमीकल वर्क्स, २० अलीगढ़।

याद आप को

कोई ऐसा छिपा हुआ रोग है जिसे आप शरम के कारण किसी से कह नहीं सकते, तो हमें लिखिये, और साथ में उत्तर के लिये =) का टिकट भेजिये। हम आप को ऐसी सम्मति देंगे कि आप का रोग घर बैठे ठीक हो जायगा। पता—

यू० पी० केमीकल वर्क्स, २० अलीगढ़।

दफ्तरों के लिये

तार सीने की मशीन

लैटरपेपर, रसीदबही, अखबार, पुस्तकें आदि को मिनटों में हजारों सी देती है। मू० ५) रु०। आर्डर के साथ २) रु० पेशगी भेजें।

पता—केमीकल प्रेस, मोहनगेट, अलीगढ़।

रामचन्द्र वैद्यशास्त्री की रजिस्टर्ड औषधें

कांग्रेस राष्ट्रपति द्वारा प्रशंसित

बालरक्षा घुटी

को, आल इण्डिया वैद्य सम्मेलन ने प्रमाणित किया है कि यह अनेक बालरोगों को नष्ट कर उन्हें पुष्ट बनाती है। दांत सुगम निकलते हैं मीठी है। छोटी शीशी ।=) बड़ी शीशी ।=) डाक व्यय ३ शीशी तक) रु० परीक्षा कीजिये

आठ हजार एजेन्ट बन चुके अब थोक व्यापारी बन रहे हैं। नियम मांगें।

मुफ्त ४ सज्जनों के पूरे पते लिखने पर "मदनशान्ता" उपन्यास मुफ्त

सुधावर्षक औषधालय नं० १ अलीगढ़

सरकारी कानून में

अपने ट्रेडमार्क, डिज़ाइन, अविष्कार, फर्म, सुसाइटी, कम्पनी को सरकार से रजिस्टर्ड, पेटेन्ट, लिमिटेड व औषधि को सरकारी लैबोरेटरी से परीक्षा व रजिस्टर्ड कराने के लिये नियम व फार्म मंगाइये।

भारत चेम्बर आफ इन्डस्ट्रीज लि०

अलीगढ़ (यू० पी०)

सुखमार्ग

शारीरिक, आत्मिक, मानसिक तथा वैज्ञानिक आदि विषयों का

मासिक पत्र

'सुखमार्ग' के अनुसरण बिन जीवन सफल किसका रहा।
सुन्दर सरल 'सुखमार्ग' यह सुखमार्ग को दर्शा रहा॥

वर्ष ३४	अलीगढ़, फरवरी सन् १९५७	अङ्क २

बल और शक्ति

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व। उपासते प्रशिषं यस्य देवाः॥
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः। कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ऋ०

हे परमात्मन ? हमारी आत्मिक शरीरिक और मानसिक शक्तियों को बल देने वाला तू ही है, तेरी उपासना से ही हम सब जीवन ज्योति पाते है। और तेरे विसराने से मृत्यु होती है हे देव ? अब ऐसा हो कि हमारी सर्व शक्तियाँ तेरी लगन में लगें। बस यही प्रार्थना है।

(स्वामी ब्रह्मानन्द दंडी गुरुकुल ऐटा)

श्रेय मार्ग

[लेखक— जगन्नाथ आर्य शास्त्री कटरा, अलीगढ़]

विचारणीय विषय है कि श्रेयमार्ग या वैदिक धर्म क्या है ? अर्थात् यह किन मूल सिद्धान्तों पर आधारित है। यदि वैदिक साहित्य का अवलोकन किया गया तो प्रतीत होगा कि वैदिक धर्म वर्णाश्रम (वर्ण+आश्रम) पर ही आधारित है।

मानव समाज को ४ वर्णों में विभाजित किया है। पहला ब्राह्मण दूसरा क्षत्रिय और तीसरा वैश्य तथा चौथा शूद्र है। ब्राह्मण के मुख्य कर्त्तव्य मनुस्मृति में इस प्रकार कहे हैं—

पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना कराना, दान देना और लेना यह ६ कर्म हैं। जिन में लेना नीच कर्म है।

क्षत्रियों के कर्म, न्याय से प्रजा की रक्षा, वेद पढ़ना तथा विषय रहित हो कर शरीर और आत्मा से बलवान रहना। मनुस्मृति में कहा है।

वैश्य के लिये पशुपालन, दान, यज्ञ करना, वेद पढ़ना, व्यापार करना, ब्याज लेना और कृषि करना मनुस्मृति में है।

और शूद्र को त्रिवर्ग की सेवा करना ही मुख्य कर्त्तव्य है।

अब संक्षेप से आश्रम व्यवस्था पर विचारें।

मानव समाज की भाँति मानव जीवन भी ४ आश्रमों में विभाजित कर दिया है।

पहला ब्रह्मचर्य दूसरा गृहस्थ तीसरा वानप्रस्थ और चौथा सन्यस्थ। ब्रह्मचर्य आश्रम में मानव जीवन की नीम जमाई जाती है। इस आश्रम में जैसा प्रभाव पक्का हो जाता है, वही अन्त तक रहता है। इस आश्रम में विद्यागृहण कर अपना कर्त्तव्य सीखता है। गृहस्थ आश्रम में अन्य तीनों आश्रमों की सेवा करना, धर्मार्थ काम करते हुये मोक्ष की ओर अग्रसर होना है। वास्तव में यह धर्म बहुत ही सावधानी एवम् सुखभोग का है। इसी आश्रम पर अन्य तीनों आश्रम भी आधारित हैं।

वानप्रस्थाश्रम में गृह त्याग कर पत्नी सहित आश्रमों में जाकर अपने अनुभवों को विद्यार्थियों को बताना और समाज सेवा करना। सन्यासाश्रम में सब कुछ त्याग कर केवल मोक्ष प्राप्ति हेतु तपस्या करना और स्थान २ पर जाकर वेद प्रचार करना।

वर्णाश्रम व्यवस्था से देश में सुख-शान्ति का संचार होगा और मनुष्य का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति होगी। यही संक्षेप में श्रेय मार्ग है।

ईश्वरीय ज्ञान और शिक्षा

[श्री स्वामी करपात्री जी का भाषण]

एक सार्वजनिक सभा में श्री स्वामी करपात्री जी महाराज ने भाषण किया। महाराज जी ने कहा कि प्रत्येक प्राणी अपनी अनन्त संज्ञा (अपरिमित जीवन) अनन्त ज्ञान, अनन्त आनन्द, अनन्त स्वतन्त्रता और अनन्त अव्याहत शासन चाहता है। ये सभी चीजें परिमित रूप से जीवन में होती हैं और अपरिमित ईश्वर में। जीव भले ही प्रकृति के ऊपर विजय प्राप्त करने का मिथ्या गर्व करे किन्तु प्रकृति के एक ही हुँकार में सारा गर्व चकनाचूर हो जाता है। आज भले ही वैज्ञानिक लोग मानते हों कि सूर्य-मंडल से एक टुकड़ा टूट कर गिरा तो वह ठण्डा हो कर चाँद बन गया। दूसरा टुकड़ा टूट कर गिरा तो ठण्डा हो कर भूमण्डल बन गया परन्तु सूर्य मण्डल को किसने बनाया ? वही जो सब के मस्तिष्क पर बुद्धि पर नियन्त्रण करने वाला ईश्वर है। उसी को मान कर चलना अध्यात्मवाद है। भौतिकवाद में व्यक्तिगत, सम्पत्ति, व्यक्तिगत भूमि नहीं रहती। सारी भूमि, सारी सम्पत्ति सारी स्त्रियाँ और सारे पुरुष सरकारी हो जायेंगे। हम कोई बाबा वाक्य प्रमाण के आधार पर या ज्योतिष के आधार पर नहीं कह रहे हैं। अतः जो अपनी सभ्यता, संस्कृति धर्म की सम्पत्ति की रक्षा चाहते हैं ईमानदार दीनदार हैं उन लोगों को अपना संगठन करना चाहिये।

आपने कहा, कम्यूनिस्ट व सोशलिस्ट समता स्वतंत्रता व भ्रातत्व को अपना ध्येय बताते हैं ! परन्तु आध्यात्मिकता किसी के पास नहीं हैं।

स्वामी जी ने कहा कि हर मनुष्य को ईमानदार दीनदार व प्रभुपरायण होना चाहिये। अन्न का अधिक उत्पादन हो इसके लिये नील गाय, टीड़ी चूहे आदि की हत्या की जाती है मगर प्रभु की माया से भयंकर बाढ़ें आ जाती है और काफी अन्न नष्ट हो जाता है। दैवी आपत्तियों को कोई नहीं रोक सकता। धर्म परायण नागरिकों पर सम्पत्ति दौड़ कर आती है।

स्वामी जी ने जनता को चेतावनी देते हुये कहा आज आर्यों का धर्म, उनकी शिक्षा व सम्पत्ति खतरे में हैं। इन तीनों की व्यवस्था शासन को नही बल्कि समाज को ही करनी है।

आपने यह भी कहा कि छात्रों पर पश्चिमी सभ्यता की छाप लग गई है। वे धुरानें पुरखों के नाम तक नहीं जानते। धर्म हीन शिक्षा का अर्थ बेईमान नागरिक उत्पन्न करना है।

शिशिर ऋतु में क्या करें

[ले० कविराज डा० पन्नालाल वार्ष्णेय एम. एस सी. ए. अलीगढ़]

शिशिर ऋतु में भी सर्दी पड़ती है, वायु कर्कश बहता है, होंठ और बेवाईओं में खुश्की हो जाती है, कुछ बादल की बूंदा बांदी भी होती है। धूप के समय भी इस ऋतु की सर्दी में रूक्षता मिली रहती है। इस लिये वात कारक और अधिक ठन्डे पदार्थ सेवन न करना चाहिये। चांवलों का भात, शीतल, पतलीं, कसैली, चरपरी आदि वस्तु, दिन का सोना और रूखे पदार्थ वर्जित हैं। इस ऋतु में स्निग्ध, मीठे खट्टे पदार्थों का सेवन दूध, घी गरम जल; गेहूं, ऊड़द, ईख के पदार्थ और आग का सेवन हित है। खेल व्यायाम, तेल मर्दन, उबटन, धूप का टहलना, बादाम केशर, कस्तूरी, लड्डू पाक आदि ताकतवर चीजों का उपयोग करना बड़ा श्रेष्ठ है। औषधियों में स्वास्थ्य के लिये च्यवनप्राश, वीर्य पुस्टी, रक्ता, सुवर्णवंग, द्राक्षासव और जोवलटीन का सेवन लाभ प्रद है। जो हरड़ का सेवन करते हों पीपल के साथ सेवन करें। इस ऋतु में पूर्व की ओर का वायु अधिक चलता है. जोकि वायु का प्रकोप करने वाला होता है। यह वायु वात रोगों घाव वाले, कफ़ज्वर, और शोथ वाले रोगियों को अतीव हानि कारक है।

स्वप्नदोष दूर करने के उपाय

[ले० डा० विश्वनाथ जी त्रिवेदी मुजफ्फरनगर]

आजकल अनेक औषधियों का आविष्कार होने पर भी यह रोग प्रायः ९० फीसदी देखने में आ रहा है लेकिन यहाँ स्वप्नदोष को बिना औषधि के मिटाने का प्राकृतिक उपाय लिखते हैं।

१—स्वप्नदोष के रोगी को दिन में इतना परिश्रम (व्यायाम) करना चाहिये जिससे शांति से उसको मीठी नींद आ सके।

२—रात्री में इस रोग वाले को भोजन न करना चाहिये खाली पेट अच्छा है। यदि भोजन करे तो बहुत सूक्ष्म करना चाहिये।

३—कोई गरम प्रवाही पदार्थ (गरम दूध, चाय इत्यादि) भूल कर भी न पीने चाहिये।

४—लघु शंका के समय और शौच के समय ठंडा पानी सहज सहज गुह्येन्द्री पर डालते रहना अत्यन्त लाभकारी है।

५—रात्री को ठीक सोने से पहिले ठंडे जल से हाथ पैर और मुख धोकर सोना चाहिये।

६—इस रोगी को बद्ध कोष्ठ (कब्ज का रहना) हानि कारक है। जुलाब वगैरा से इस शिकायत को नहीं हटाना चाहिये, किन्तु सादा मोटा भोजन शाक पात वगैरा और मौसमी ही फल खाकर कब्ज को हटाना विशेष लाभ कारी हैं।

निराली है।

(महेशचन्द्र सुहृद बी. ए., अलीगढ़)

तू ही क्या निराला तेरी दुनियाँ निराली है।
बनाकर बगीचा बना बगीचे का माली है॥ तू ही क्या॥

रङ्ग बिन रङ्गीली चीज चमके लाल लाली है।
कोई स्वेत, कोई काली, कोई हरियाली है॥
नीली और पीली पत्ती बैंजनी निराली है।
शक्ति शाली सृष्टि सारी कण नहीं खाली है॥ तू ही क्या॥१

सुबह शाम दोपहर राति अंधियाली है।
सरदी वो गरमी वर्षात निकाली है॥
जलो जथा एक करै ऋतु वर्षा वाली है।
बिजली और पारा ओला आँधी पीरी काली है॥ तू ही क्या॥२

कोई खड़े इबादत करते कहते शान आली है।
कोई मंदिर माहिं बजावें घंटा घड़ियाली है॥
कोई बैठे ध्यान धरते कहते निरंकाली है।
कोई सन्ध्या यज्ञ करते मुक्ति ये निकाली हैं॥ तू ही क्या॥३

कोई बी० ए० डिग्री लेते कोई एम० ए० वाली है।
कोई महा कवि बनते कोई प्रतिभा शाली हैं॥
कोई सम्पादक बनते हैं कोई लेखक आली है।
कोई वकील बैरिष्टर है कोई वैद्यक जाली है॥ तू ही क्या॥४

कोई वेदों को पढ़ते हैं मनुस्मृति पढ़ि डाली है।
कोई षट् दर्शन पढ़कर गीता भी संभाली है॥
कोई महाभारत पढ़ते रामायण निकाली है।
कोई पुराण कोई कुरान बाइबिल बनाली है॥ तू ही क्या॥५

कोई आर्य कोई बौद्ध हैं सनातन संभाली है।
हिन्दू मुसलिम और ईसाई कोई सिक्ख अकाली है॥
कबीर पंथी, कूढ़ा पंथी नानक पंथी चाली है।
रामा नन्दी, कृष्णा नन्दी, राधिका निकाली है॥ तू ही क्या॥६

पृथ्वी का पिता-पृथु

[श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री]

प्राचीन भारतीय सभ्यता में न्याय और शासन व्यवस्था के प्रति आदिम काल से ही उच्च भावना थी। सुदृढ़ सामाजिक अनुशासन और व्यक्तिगत आचरण की शुद्धता दोनों ही ओर सबका ध्यान रहता था। विशेषकर शासन का तो यह मुख्य कर्त्तव्य ही था कि वह समाज और व्यक्ति दोनों ही को ऊपर उठाने का यत्न करें। सृष्टि के समस्त कार्य व्यापारों को भली भाँति चलाने के लिये ही उस राजतंत्र की व्यवस्था की गयी थी, जो सहस्रों वर्षों तक अबोध रूप से इस विस्तृत भूखंड पर चलती रही। वैदिककाल में राजाओं का निर्वाचन प्रजा करती थी और वह देखती थी कि "किस योग्य पुरुष को राजा बनाने से हमारी विजय होगी, हमारी उन्नति होगी, हमारा आरोग्य बढ़ेगा, हमारा तेज, हमारा ज्ञान और हमारा आत्मिक बल बढ़ेगा। हमारे यज्ञ सफल होंगे, हमारे पशु उत्तम होंगे, हमारी संतति बलवती और चरित्र वाली बनेगी और शूरवीर पुरुषों की अच्छी संख्या हमारे देश में होगी।" इन सभी बातों को ध्यान में रखकर ही प्रजा अपने राजा या शासक का चुनाव करती थी। प्रजा का अनुमोदन जिसे प्राप्त नहीं होता था वह राजा नहीं हो सकता था। भले ही वह राजपुत्र क्यों न हो।

किन्तु ऐसा लगता है कि चिरकाल तक एक ही रूप में पड़े हुए शासनतन्त्र की गड़बड़ियों के कारण जनता की चेतना इस ओर से उपेक्षित होने लगी और धीरे-धीरे राजा लोग आनुवंशिक परम्परा के अधिकारी बनने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि जिन उत्तमोत्तम फलों की आशा से राजा का पद बनाया गया था, उनका सर्वथा अभाव होने लगा। राजा लोग अपने अधिकारों को ईश्वर प्रदत्त समझ कर निरंकुश हो गये, और प्रजा के हिताहित की चिन्ता छोड़कर स्वेच्छाचारी बन गये। परस्पर के ईर्ष्या-द्वेष, छल छन्द, एवं दुर्व्यसनों के कारण प्रजा का पालन पोषण एवं अनुरंजन करना तो दूर, वे उल्टे प्रजा के शोषक और पीड़क बन गये। जहाँ उनसे आशा की जाती थी कि वे प्रजा की सेवा के लिये इस पद पर विराजमान हैं, वहाँ वे प्रजा से सब प्रकार की सेवा लेना ही अपना अधिकार समझने लगे। जिसकी कृपा के प्रसाद से उन्हें राजपद प्राप्त होता था, उसे वह अपनी ही कृपा का पात्र समझने लगे। स्वयं को ईश्वर या सर्वदेवमय होने की घोषणा करो कर वह अपने को निर्बाध मानने लगे और यह समझ बैठे कि

जब तक धरती पर चन्द्रमा और सूर्य का अस्तित्व है तब तक राजतंत्र की पद्धति भी अक्षुण्ण चलती रहेगी। इस मोहनिद्रा का जो परिणाम होना था, वही हुआ। चिरकाल तक राजाओं द्वारा बनाकर पिलायी गई इस मोह मदिरा की भक्तता अन्ततः दूर हो गयी और प्रजा ने अपने अधिकार सूत्रों को पुनः अपने हाथों में वापस ले लिया। जो लोग वंश परम्परानुसार राजा बनकर चिरकाल से ऊँचे सिंहासनों पर विराजमान थे, वे नीचे उतार दिये गये और प्रजा ने पुनः अपना शासक चुनना आरम्भ कर दिया। विशेषता यही रही कि पहले की निर्वाचन पद्धति कुछ और थी और आज की कुछ और हो गयी है। पहले यदि राजा का निर्वाचन उसके जीवन भर के लिए अथवा जब तक प्रतिज्ञा का पालन करे तब तक के लिये किया जाता था, तो आज के शासक का चुनाव कुछ सीमित अवधि भर के लिये ही किया जाता है।

प्रजा द्वारा राजा के निर्वाचन की इस प्रथा का अन्त प्रजा वर्ग की उदासीनता अथवा राजाओं द्वारा निर्मित वे परिस्थितियाँ थी, जिनमें पड़ कर वह चिरकाल की एक रसता के कारण अवसन्न हो गई थी, किन्तु बीच बीच में ऐसे भी उदाहरण प्राप्त होते हैं जब राजा की स्वेच्छाचारिता से पीड़ित प्रजा ने राजा को अपदस्थ करके उसके स्थान पर दूसरे को राजा चुन दिया है। अन्यायी शासक वेन की पौराणिक कथा इस प्रसंग पर सुन्दर प्रकाश डालती है। कथा का संक्षिप्त रूप इस प्रकार है—

राजा वेन। स्वायम्भुव मनु का वंशज अंग नामक राजा बड़ा ही दयालु था, न्यायपरायण था। प्रजा के हित के लिये उसने ऐसे अनेक कार्य किये थे, जिसके कारण बाद में चल कर उसी के नाम पर अंग देश की प्रसिद्धी हुई। अंग की रानी सुनीथा मृत्यु की कन्या थी और वह बड़ी ही कुरूपा और दुष्ट प्रकृति की स्त्री थी। पति के पुण्य कार्यों में अहर्निशि विघ्न डालना ही उसका काम था। सुनीथा से राजा अंग को वेन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था, जो युवा होने पर अत्यन्त पराक्रमी, शूरवीर किन्तु माता के स्वभाव के अनुरूप परम विधर्मी तथा पीड़क शासक हुआ। अंगराज के वानप्रस्थी जीवन अपना लेने पर जब वेन के प्रचण्ड हाथों में शासनसत्ता स्थिर हुई तो धरती काँप गयी। अनाचारियों एवं पापियों का अभ्युदय होने लगा तथा धर्मपरायण, सज्जनों एवं दीनदुःखियों को नारकीय यातनाएँ उठानी पड़ी। अबलाओं की मर्यादा नष्ट हो गई

और देवताओं तथा पितरों के कार्य बन्द कर दिये गये। अन्यायी बेन ने अपनी अपराजेय सेना लेकर धरती के सम्पूर्ण अंचलों को अपने पैरों से रौंद डाला, और जिसने भी सामने सिर उठाया, उसने सब को समाप्त कर दिया। सत्प्रवृत्तियाँ तिरोहित हो गयी और वीभत्स गुन्डे गर्दी का नंगा नाच समूचे साम्राज्य में होने लगा। जो लोग कामी, लोभी, दुर्व्यसनी तथा नीच प्रकृती के थे, उन्हें चुन-चुन कर बेन ने शासन के ऊँचे पदों पर बैठा दिया, और जो न्याय-परायण, धर्मिष्ठ तथा सदाचारी थे, उन्हें अपदस्थ करके या तो मार डाला या वे स्वयं ही उसका राज्य छोड़ कर पर्वतों की गुफाओं में भाग गये। बेन ने चारों ओर घोषणा करा दी कि" अब से इस मेरे राज्य में न तो कोई यज्ञ कर सकता है और न जप-तप। ईश्वर मैं ही हूं, लोग मेरा ही स्मरण करें, मैं उनकी सब विपत्तियाँ दूर कर सकता हूं। मेरे ही उद्देश्य से यज्ञ, जप, तप सब कुछ किया जाय, क्योंकि इस लोक में एवं परलोक में मैं सबका कल्याण करने की शक्ति रखता हूँ"

अन्यायी बेन की इस आसुरी घोषणा से धरती अवसन्न हो गयी और चारों ओर निस्तब्धता छा गयी। किसी में यह साहस नहीं था, जो उसकी आज्ञा के विरोध में एक शब्द भी बोल देता। प्रजा वर्ग में भीतर ही भीतर असन्तोष और अशान्ति की ज्वाला धधकने लगी और बाहर भी अत्याचारी गुन्डों की स्वेच्छाचारिता से धीरे-धीरे हाहाकार फैलने लगा। कुशासन में न कोई दण्ड-व्यवस्था रह गयी और न न्याय निष्ठा। शासन के ऊँचे पदों पर बैठाये गये निरंकुश अत्याचारी गुन्डों ने अपने सुख स्वार्थों की बेदी पर प्रजा के हितों का बलिदान करना आरम्भ कर दिया। प्रजा की धन सम्पत्ति की तो कोई बात ही नहीं उनकी स्त्री एवं कन्याओं को भी बे बलात् छीनने लगे और रात दिन मदिरा के मोहक नशे में चूर रह कर शासन व्यवस्था से दूर दूर रहने लगे। फिर तो वही हुआ, जो स्वाभाविक था। प्रजा की सहनशक्ति समाप्त हो गयी। उसमें विद्रोह की वह ज्वाला धधकी, जिसकी प्रचण्ड आँच में अपने समस्त अनुगामियों समेत बेन दग्ध हो गया। कुछ पुराणों का कथन है कि ऋषियों ने उसे अपने शाप से और कुछ का कथन है कि प्रजा वर्ग ने अपने क्रोध से उसे भस्म कर दिया और उसकी दाहिनी पृथु (मोटी) भुजा का मन्थन कर एक दूसरा राजा पैदा किया गया जो रूप, गुण और ऐश्वर्य में सब प्रकार से अनुपम था। प्रजा की आन्तरिक लालसाओं के अनुरूप यह राजा अपने दैवी गुणों के कारण पृथ्वी वल्लभ हुआ बेन की पृथु (मोटी) भुजाओं से उत्पन्न होने के कारण उसका नाम "पृथु" रखा गया।

संस्कृत और संस्कृति

(ले० सेठ श्री निवासदास पोद्दार कलकत्ता)

राजपूताना नाथ द्वारे के संस्कृत साहित्य सम्मेलन में श्री कैलाशनाथ काटजू ने कहा कि संस्कृत का संरक्षण और सम्वर्धन संस्कृत साहित्य पठन-पाठन पर निर्धारित है। संस्कृत साहित्य के जीवित रहने के कारण ही भारत में भारतीय संस्कृत का संरक्षण बना है अन्यथा विश्व के अन्य राष्ट्रों की प्राचीन संस्कृतियाँ लुप्त हो चुकी हैं। जबकि भारत आज भी अपनी सनातन संस्कृति के अनुसार कुछ प्रगति कर रहा है। देश वासियों का कर्तव्य है कि वे संस्कृत अध्ययन पर जोर दें, और सरकार को सहयोग देवें।

हर्ष का सम्वाद है कि संस्कृत प्रचार के सम्बन्ध में हमारे राजनीतिक नेता भी अब सहयोग देने लगे हैं। लेकिन ? श्री मान जी से और भारतीय संस्कृति के रक्षकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि इस के साथ निम्न बातों पर भी विचार करें।

(१) भारत सरकार संस्कृत भाषा के प्रचार को सचमुच करना चाहती है। या यह भी कोई राजनैतिक घुमावदार बात है।

(२) संस्कृत भाषोन्नति कैसे होगी। भाषोन्नति तभी होती है जब वह भाषा आर्थिक कार्य करने के लिये भी उसका उपयोग हो या अध्यात्मिक क्रिया कलापों के साथ हो। फिर भी संस्कृत का मूल तो अध्यात्मिक ज्ञान है।

(३) अध्यात्मिक उन्नति के लि संस्कृत का उपयोग आवश्यक है, पर साहित्यक ग्रन्थों के आध्यापन के लिये ब्रह्मचर्याश्रमों में कड़ाई से पालन होना आवश्यक है।

(४) संस्कृत साहित्य का जो उपदेश दिया जाता है, उस का कहीं साधू महात्माओं और संस्कृत के विद्वानों पर संस्कृत के नाम से कोई कूटनिति का फंदा तो नहीं है। जिस से रहा सहा संस्कृत साहित्य ही लोप हो जाये। साधु महात्मा और विद्वान, गोवध के पक्ष पाती समझे जाते हैं। लेकिन एक तरफ गौ माँस खाद्यों में सम्मलित करने की बात कही जाती है और गौ से दवा बनाने के लिये करोड़ों की लागत से आधुनिक कसाई खाने खोले जा रहे है क्या यह विचारणीय विषय नहीं है।

क्या अँग्रेजी पढ़ाने और अँग्रेजी वेशभूषा से, क्या सिनेमा आदिकों से, या गौ वध से, या संस्कृत की पाठशाला विद्यालय कालिज गुरुकुल आदि न खोलकर नाम मात्र को ही संस्कृत का प्रचार करना कहने से, या ब्रह्मचर्याश्रम स्वास्थ्याश्रम, संस्कृताश्रम, साधु आश्रम आदि धार्मिक कार्यों के न बढ़ाने से कहीं संस्कृत और संस्कृतिकी रक्षा हो सकती है।

अतः भारतीय संस्कृत और संस्कृति की रक्षा कैसे होगी, और कैसे सुख शान्तिमय जीवन होगा, विचार कीजिये।

॥ सीखो ॥

[वैद्य डूँगर सिंह विचित्र कवि छतारी]

लिखना सीखो पढ़ना सीखो । दिन दिन आगे बढ़ना सीखो ।
हँसना सीखो गाना सीखो । दुख में भी मुसकाना सीखो ।
सब की सेवा करना सीखो । देश धर्म पर मरना सीखो ।
बुरे कर्म से डरना सीखो । दुखियों के दुख हरना सीखो ॥

बेकारी का बाना

[हरिश्चन्द्र आर्य 'नवीन' चंदौसी]

छै छै साल बन्द रहते हैं, कालेज की दीवारों में ।
तन धन खोकर नाम लिखाते, जाकर के बेकारों में ॥
आत्मग्लानि से व्याकुल होकर, ठान लिया है यह मनमें ।
"खाकरविष छुटकारा पालूँ", क्या रक्खा है जीवनमें ॥
बच्चे लेकर विधवा रोती, नहीं आज है खाने को ।
उनका हृदय भला क्यों चाहे, बेकारी के बाने को ॥

जानने योग्य कुछ हित की बातें

(ले० स्वामी अनन्तानन्द अकोला विदर्भदेश)

१—थोड़ी जगह में अधिक मनुष्यों को न सोना चाहिये ।
२—खाली पेट पर मस्तिष्क से काम न लो ।
३—भोजन करने के बाद फौरन कार्य में लग जाना अच्छा नहीं ।
४—पीठ झुका कर पढ़ने से मस्तिष्क को बहुत जोर पड़ता है ।
५—बिना विचारे जहाँ तहाँ थूकने की आदत अच्छी नहीं ।
६—मुँह ढककर सोना कभी अच्छा नहीं होता ।
७—अधिक मसाला खाने से पेट खराब हो जाता है ।
८—नाक द्वारा पानी पीने से मस्तिष्क साफ रहता है ।
९—तेज बुखार की प्रारम्भिक दशा में दूध पीना हानिकारिक है ।
१०—बचपन से ही जूते पहनाने से खून की गति बड़ी कठिनाई से होती है ।

पहले प्रश्नों के उत्तर

उ० १—यज्ञोपवीत में तीन लड़ी होती हैं, जोकि माता, पिता और गुरु की शिक्षाओं को मानने की प्रतीक हैं, और मल मूत्र त्यागने के समय कान पर इस लिये लगाते हैं कि अशुद्धी के समय कान बाँधने से मूत्रेन्द्रिय के रोग अंडवृद्धि आदि नहीं हो सकते, और दूसरों को यह प्रतीत हो जाय कि जनेऊ कान पर लगा है यह व्यक्ति इस समय अशुद्ध है, कोई शुद्धता का व्यवहार उस समय न करें।

भगवान् देव गुरुकुलीय पाठशाकर

उ० २—आप पतले दस्तों के लिये दिन में ३ बार ४-४ माशे गंगाधर चूर्ण ताजा जल के साथ सेवन करें, और खिचड़ी चावलों की खावें।

वैद्य भद्रगुप्त तिलहर

उ० ३—च्यवनप्राश की विधि इसी अंक में देखिये।

सम्पादक

उ० ४—पायरिया दंत विकारों को तौमर के बीज, दालचीनी, सोंठि, १-१ तो० मस्तङ्गी, ६ मा० तूतिया ३ माशे, फिटकरी १ तोला सेलखड़ी ४ तो० सबको कूटछान कर २ माशे अजमान का सत्त मिलाकर शीशी में रखलें, दाँतों से सुबह शाम लगाकर कुछ देर बाद कुल्ला करें।

उ० ५—आपको ७० वर्ष की उम्र में यह बात का रोग है, आप प्रातःकाल सिद्ध मकरध्वज १—१ रत्ती १ तोला मलाई के साथ और शाम को बात गुजाँकुश रस १-१ रत्ती शहद ६ माशे के साथ सेवन करें। आपका रोग अवश्य चला जावेगा।

स्वामी ऋतानन्द तपोवन

असली च्यवनप्रास अवलेह

त्रिफला १२ तोले, सिरस, अरनी, खंभारी, पाढ़ि, बेलसोनाक, शरिवन, पिठवन, गोखुरू, भटकटैया, पीपल, काँकड़ासींगी, दाख, गिलोय, नागबला, ऋद्धि सिद्ध, जीभक, ऋभक, कचूर, वराईकन्द, मौथा, पौकरमूल, काकतुन्डी, काकौली, क्षीरकाकौली, असगन्ध, कमलगट्ठा, मैदा, महामैदा, इलायची छोटी, अगर, चन्दन सफेद प्रत्येक ४-४ तोला लेकर कूट ले और १६ गुने जल में काढ़ा बनावें, जब चौथाई जल रह जाय तब उतार कर छान कर रख लें। फिर बड़े बड़े आँवले पाँच सेर ले ४० सेर जल में औटावें। जब पाँच सेर जल रह जावे उतार कर आँवले की गुठली निकाल कर लुगदी को महीन पीस लें, और स्वरस निकाल कर २८ तोले गाय के घी में लुगदी भूनें, जब भुन जावे तब स्वरस और काढ़ा और पाँच सेर मिश्री डालकर अग्नि पर गाढ़ा करे, जब अवलेह बन जावे तब पीपल ८ तो० वंशलोचन १६ तो० चातुर्जात ४ तो०, शहद १ सेर मिला कर काँच के अथवा मिट्टी के चिकने पात्र में रख लें मात्रा—६ माशे से २ तोले तक आध पाव दूध के साथ खावे तो समस्त मूत्र और धातु विकार दूर करता है, गरमी और तपैदिक खाँसी आदि फेफड़ों के विकार ठीक होते हैं कमजोरी दूर कर बल बढ़ाता है, शास्त्र में इसका सेवन करना बुड्ढों को जवान बनाना लिखा है। इसके गुणों से डाक्टर भी मोहित हैं। आप न बना सकें तो यू० पी० केमीकल वर्क्स अलीगढ़ से मँगावें।

वैद्य कन्हीलाल कानपुर

नये समाचार

आयुर्वेद पत्रकार संघ

तहसील पुवांयां जि० शाहजहाँपुर उ० प्र० में ता० १६-१७-१८ फरवरी को होने वाले अ० भा० आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रचारक संघ के चतुर्थ अधिवेशन के साथ उसी पंडाल में अ० भा० पत्रकार सम्मेलन भी धूमधाम से सम्पन्न होगा। आयुर्वेदीय सम्पादक और पत्रकारों को अधिक से अधिक संख्या में पहुँच कर यह परामर्श करना चाहिये कि आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति घोषित कराने के लिये पत्रों द्वारा क्या क्या उचित उपाय किये जायें।

उ० प्र० वैद्य सम्मेलन

ता० १५-१-५७ को गोकुल भवन अलीगढ़ में मध्याह्न समय सम्पन्न हुआ, सम्मिलित होने वाले सज्जनों में कुछ प्रमुख सज्जनों के नाम निम्न प्रकार है।

वैद्य धर्मानन्द जी केशरवानी एम० डी० अध्यक्ष आयुर्वेद कालेज लखनऊ, अमरनाथ जी मंत्री उ० प्र० देहरादून, वैद्य लक्ष्मीनारायण जी मेरठ, वैद्य प्रागदत्त जी आगरा, वैद्य बाबूराम जी हापुड़, वैद्य रघुवीरशरण जी बुलन्दशहर, वैद्य रामनाथ जी इटावा, वैद्य देवीशरणजी सं०धन्वन्तरि विजयगढ़, वैद्य कृष्णगोपाल सं० प्राणाचार्य विजयगढ़, वैद्य श्यामलाल सुहृद संपादक सुखमार्ग अलीगढ़, वैद्य रामचन्द्र जी कनवरीगंज, वैद्य भूदेव जी वर्मा सुभापरोड, वैद्य इन्द्रमणि जी अलीगढ़, गंगालहरी जी शर्मा अलीगढ़, डा० सूर्य अलीगढ़ आदि उपस्थित थे।

कई एक सारगर्भित प्रस्ताव पास हुये जो कि आगामी अंक में दिये जावेंगे।

नये सिक्के

१ अप्रैल १९५७ से १) रु० में १०० नये पैसे चालू होंगे।

जिला अलीगढ़ वैद्य सम्मेलन

जिला अलीगढ़ वैद्य सम्मेलन का ११वाँ अधिवेशन प्रदर्शिनी में १४-१-५७ को हुआ उद्घाटन श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य डिप्टी मिनिस्टर उत्तर प्रदेश ने किया; तथा सभापति का आसन श्री धर्मानन्द केशरवानी आयुर्वेदालंकार एम० डी० प्रिंसीपल स्टेट आयुर्वेदिक कालिज लखनऊ ने सुशोभित किया,, एवं उत्तर प्रदेशीय वैद्य स० सभापति श्री बाबूराम जी मिश्र और प्रधान मंत्री कविराज श्री अमरनाथ जी देहरादून के भी सम्भाषण तथा कई प्रस्ताव पास हुये सन १९५७ का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान–वैद्य ईश्वचन्द जी प्राणाचार्य कचौरा, उपप्रधान- पं० हरस्वरूप जी मजूपुर, प्रधान मंत्री पं० दीनदयालु जी उपसन्यु वैद्य अलीगढ़, संयुक्त मंत्री वै० रामदयालु जी अलीगढ़, संगठन मंत्री पं० प्यारेलाल जी, अलीगढ़ कोषाध्यक्ष पं० बनवारीलाल जी आय व्यय निरीक्षक पं० प्यारेलाल जी।

[शेष आगामी अ क में]

श्याम छाप की
असली और सच्ची दवायें

यू० पी०केमीकल वर्क्स अलीगढ़, भारतीय नागरिकों की आज से ही नहीं ? किन्तु पिछले ४० वर्षों से सेवा कर रहा है। कोटा तथा बिहार के भूकम्पों में, बंगाल के अकाल तथा महामारी में, प्रयाग के कुम्भ में बिना मूल्य दवायें बाँट कर जो लोक प्रियता प्राप्त की है वह आज किसी से छिपी नहीं। इसकी अनेक दवायें भारत सरकार से रजिस्टर्ड हैं। इन दवाओं का प्रयोग कर बहुत से बड़े-बड़े वैद्य, डाक्टरों, राजा, महाराजा तथा काँग्रेस के नेताओं ने हमें प्रसंशा-पत्र भेजे हैं, जिन्हें हम स्थानाभाव के कारण यहाँ प्रकाशित नहीं कर रहे, जो सज्जन देखने के इच्छुक हों वे वृद्ध सूचीपत्र मँगाकर देखें।

यू० पी० केमीकल की 'श्यामछाप' की औषधियाँ झूठे नोटिसबाजों की तरह नहीं किन्तु इसकी दवायें उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध चिकित्सक एवम् 'ए' क्लास में रजिस्टर्ड वैद्यभूषण श्यामलाल 'सुहृद' एच० एल० एम० एस० के निरीक्षण में निर्माण की जाती हैं और बाजार में आने से पूर्व 'सुखरंजन औषधालय' में परीक्षा कर रोगियों पर प्रयोग की जाती हैं तथा लाभ दायक सिद्ध होने पर ही उन्हें पैक किया जाता है। केमीकल की सभी दवायें फौरन ही रोगों पर अपना प्रभाव दिखाती हैं खरीदने से पहिले रजिस्टर्ड 'श्याम छाप' अवश्य देखलें क्योंकि कुछ नक्कालों ने हमारी नकल भी करली है। यू० पी० केमीकल वर्क्स की गुणकारी दवायें सब सौदागरों पर मिलती हैं।

प्रधान प्रबन्धक

यू० पी० केमीकल वर्क्स, अलीगढ़।

२ मंगाने का पता—यू० पी० केमीकल वर्क्स, अलीगढ़

भारत सरकार से रजिस्टर्ड

श्याम छाप की

सच्ची अनुभूत प्रसिद्धि औषधियाँ

रक्ता

यह प्राचीन काल की सुवर्ण, मृगॉग, मोती, कान्तिसार, हिमोग्लोबिन फौलाद, जंतियाना और गुलूकोज आदि २ कितनी ही दवाओं के संयोग से और रसायनिक क्रियाओं द्वारा बनाई गई है, और समय समय पर इसकी जाँच भी होती आई है। इसका गुण ठीक वैसा ही होता है जैसा कि शरीर में रहने वाले रक्त का, इसी लिये इस का नाम "रक्ता" रक्खा गया है। यह मीठी स्वाददार है, दूध, चाय और जलमें मिलाकर पीते हैं।

खून की कमी

शरीर में रक्त (खून) की कमी होने से उत्साह घट जाता है। भूख कम हो जाती है। पेट गुड़ गुड़ाया करता है। चहरा और होट पीले पड़ जाते हैं। थोड़ी मिहनत से ही दिल धड़कता है। कमर में दर्द पैरों में थकावट, यहाँ तक कि शरीर के सब अङ्ग पीले और कमजोर पड़ जाते हैं। किसी काम को मन नहीं लगता, दिल, दिमाग़ और फेंफड़ों की कमजोरी तथा पाँडु, प्रमेह, स्त्री प्रदर व क्षय आदि रोगों के लिये यह 'रक्ता' नामक औषधि तैयार की गई है।

रक्ता

रक्ता से खून की कमी दूर होती है, क्योंकि यह शरीर का खून बढ़ाने में सबसे अधिक प्रमाणित हुई है। अपने शरीर को तोलकर फिर सेवन करो वजन बढ़ाकर शरीर को ताकतवर बनाती है। खून बढ़ाने और स्वास्थ्य तथा शक्ति स्थिर रखने की मीठी स्वादिष्ठ दवा है। भूख बढ़ाकर खाना आसानी से हजम हो जाता है। शरीर में ताकत बढ़ने लगती है। पीलापन दूर होकर साफ खून पैदा होता है। सूखा हुआ शरीर हरा होने लगता है। पाँडु, प्रमेह, धातु क्षीणता, स्त्री प्रदर, अर्श, संग्रहणी, तपैदिक आदि रोगों से आई हुई दुर्बलता तथा किसी भी कारण से कितनी ही कमजोरी होगई हो 'रक्ता' के सेवन से सर्वथा नष्ट हो जाती है। मूल्य २)

नोट—नक़ल करने वालों से सावधान रहें।

३ मंगाने का पता-यू० पी केमीकल वर्क्स, अलीगढ़

मेधावी

[बुद्धिवर्धक-परीक्षा पास कराने वाली]

यह 'मेधावी' बुद्धि वाले स्थान को सुधारने में अनुपम सिद्धि हुई है। दिमागी काम करने वाले वकील, बैरिस्टर, मुसिंफ, जज, मास्टर विद्यार्थी, उपदेशक, सम्पादक, तथा क्लर्कों के लिये प्राण प्रिय है। याददास्त बढ़ाती है। दिमागी कमजोरी मिटाकर ज्ञान तन्तुओं को ताकत देती हैं। नजले को दूर कर समय से पहले बालों को सफेद होने से रोकती हैं। यह मिठी दवा दूध या पानी से पी सकते हैं। मू० १।)

जोवल्टीन [स्वास्थ्यवर्धक]

यह शक्ति और स्वास्थ्यप्रद पदार्थ थकान और सुस्ती को दूर करता है। सुन्दर स्वास्थ्य के लिये पौष्टिक तत्व प्रदान करने के साथ ही साथ साथ मस्तिष्क शरीर और स्नायुओं को ताकत देता है। ताजो मलाई, दूध तथा अन्य पौष्टिक तत्वों से बनी है। दूध, चाय, पानी आदि पीने की चीजों में डालकर पीते हैं। मू० २॥)

सुखरंजन

यह बिना किसी अनुपान के बच्चों से लेकर बुड्ढों तक के बुखार ऐंठा, कफ, खाँसी, नजला, जुकाम, दमा, मुंह के छाले, तिल्ली, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द वायुगोला, जीमचलाना, बच्चों के हरे पीले दस्त, रोना, दूध पटक देना, अजीर्ण, हैजा, प्लेग, मलेरिया आदि रोगों की शर्तिया दवा है। गर्भिणी स्त्री और पशुओं के रोगों को भी लाभकारी है। मू० ॥)

वीर्य्य पुष्टी

वीर्य्य ही शरीर का सार और शक्ति बढ़ाने वाला होता है। इसके सेवन से अत्यन्त वीर्य्य बढ़ता है, कमजोरी, हौलदिली हड़कल सुस्ती, प्रमेह स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, शीघ्रपतन, आदि वीर्य्य के समस्त रोग दूर होकर शरीर में ताकत आती है। नामर्दी को दूर कर सन्तान पैदा करने के योग्य बनाती है। की० २)

मेदमार [मुटापा नाशक]

मोटापन बुरा होता है। यह दवा भद्दे मोटेपन को दूर करके शरीर को मजबूत और फुर्तीला बनाती है। सेरों बजन घटा देती है इसके सेवन से आप उम्र में १० वर्ष कम जँचने लगेंगे। मू० ६)

हड़पुष्टी

यह दवा उन दवाइयों के संयोग से बनी है जो कि हड्डियों को पुष्ट करने वाली है। शरीर के किसी स्थान की कोई हड्डी कमजोर हो, अपना पूरा काम न करती हो, थोड़े से घूमने फिरने में थक जाते हों, दाँत कमजोर होने लगे हों या हड्डियाँ चौड़ाई लम्बाई में छोटी रह गई हों तो यह दवा हड्डियों के सब विकारों को निकाल कर उनको पुष्ट तथा असली हालत में करती है। मूल्य ३)

बिजली की शक्ति

जिन स्त्री पुरुषों की काम वासना की शक्ति घट गई हो, स्त्री पुरुषों दोनों का संग करने का मन नहीं होता हो, तो इसको खावें। संभोग शक्ति बिजली के समान पैदा करती है। मू० १ शी० २॥)

कस्तूरी वटी [रुकावट को]

स्त्री सहवास से पूर्व खाने से शीघ्र पतन दूर होकर वीर्य बहुत देर तक रुक सकता है। अन्य कुछ विकार नहीं करती। मू० २॥)

गिनोरियल [सुजाक को]

यह सुजाक रोग की शर्तिया दवा है। पेशाब के समय होने वाली जलन और दर्द को सिर्फ २४ घंटे में आराम कर देती है। पीव आना बंद होजाता है। मूत्र साफ उतरने लगता है। मू० १॥)

जौहरी तिला

इसके लगाने से हर तरह की नपुंसकता, सुस्ती, ढीलापन व इन्द्रिय छोटी, पतली और टेढ़ी होना तथा नसों की बेकारी दूर होकर उसी समय इन्द्रिय में पुष्टता और दृढ़ता प्राप्त होती हैं। आप भी मँगाकर इस 'जौहरी तिला' का जौहर देखिये। मू० २)

उपदंशी [आतशक]

आतशक गर्मी में इन्द्री पर घाव होने से इन्द्री गल कर गिरने लगती है 'उपदंशी' को घावों पर छुरकने से २-३ दिन में घाव अच्छे हो जाते हैं। मू० ॥)

अर्शहरी [बवासीर को]

ये दवा बवासीर खूनी तथा बादी दोनों को दूर करती है। दस्त साफ लाती है। जिनको एक-एक पाव खून गया है और सब पीले पड़ गये थे गुदा में मस्से दर्द और सूजन आने लगी थी, उनको इससे आराम हो गया है। मू० २)

मूल्य में चौथाई कमी

दुनियाँ में हलचल मचा देने वाली पुस्तक

आसामी बंगाली तिलस्मोराज

या

खजाना—करामात

जिसने भारत के कोने २ में हलचल मचादी और जिसकी हजारों प्रतियां ६)रु० मूल्य होते हुए भी हाथों हाथ खतम हो गई, और फिर भी आर्डरों का तांता लगा ही रहा। पहिले एडीशन पर हजारों आदमियों का यह कहना है कि यह पुस्तक नहीं बल्कि नामर्दों को मर्द, बाँझों को सन्तान, रोगियों को निरोग और हजारों प्राणियों को प्रति वर्ष काल से बचाने वाली, भारत के पूज्य महात्माओं की कमी व मिटने वाली अद्भुत शक्ति का भन्डार सचमुच "खजाना करामात" ही है। इन सब अद्भुत प्रयोगों के अलावा कामरूप देश आसाम बंगाल और नैपाल की तराई में जादू और वशीकरण विद्या की अद्भुत लीलायें, जिनसे आपको आश्चर्य ही नहीं बल्कि एक अद्भुत शक्ति का भन्डार हाथ लगेगा और इनको मर्द बना देने वाली विज्ञापनी औषधिओं, वशीकरण मंत्रों, यन्त्रो, पर खर्च करने से पहले इस अद्भुत पुस्तक को देखलें। फिर यदि पुस्तक आपको न पसन्द हो तो हमारी गारन्टी है कि तीन दिन देखकर वापिस करदें। हम दुरुस्त मूल्य लौटा देंगे। इससे बढकर और क्या सचाई होगी। इस नये संस्करण में दसों वशीकरण आदि के परीक्षित, कभी फेल न होने वाले प्रयोग बढ़ाये गये हैं। पृष्ठ संख्या भी पहले से अधिक लगभग ६५० पृष्ठ हो गई है। मूल्य वही ६) रु० सजिल्द ६॥), महसूल १।) अलग है। परन्तु आर्डर के साथ पेरागी रु० भेजने वालो को महसूल माफ होता है जल्द आर्डर दें नहीं तो यह एडीशन भी खतम हो जायेगा और फिर पहले की तरह हीं पछताना पड़ेगा। अधिक माँग के कारण ग्राहकों "की सुविधा के लिये" (पंजाब) में हमारा आफिस खुल गया है वहां जल्द आर्डर देकर मंगावे।

नोट—सुखमार्ग के ग्राहकों को विशेष रूप से मई तक ।) प्रति रु० रियायत होगी जल्दी एक प्रति संग्रह करलें। पता—

रायसाहब के०एल०एन्ड सन्स, जगाधरी (पंजाब)

SUKHMARG Regd. No. A 220

सुखमार्ग

वार्षिक मूल्य १)

सर्व विषय सम्पन्न, अपूर्व सामाजिक मासिक पत्र

स्वास्थ्य और सम्पत्ति प्राप्ति को पढ़ें

पता—सुखमार्ग कार्यालय, केमीकल प्रेस मोहनगेट २०, अलीगढ़ ।

नोट—पाँच ग्राहक बनाने वालों को पत्र मुफ्त में पहुँचा करेगा।

सेवा में,

श्री स्वामीदयानन्दजी - वेद प्रकाश

गोविन्द राम हलवाई

नई सड़क दिल्ली

मुद्रक एवं प्रकाशक श्यामलाल 'सुहृद', केमीकल प्रेस, मोहनगेट, अलीगढ़ ।